अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

21वीं सदी के वैश्विक दंगों और जातीय संघर्षों के समाधान में सत्याग्रह और अहिंसा की प्रासंगिकता

Raviranjan,U.G.C.NET Qualified,
M.C.A.,M.A. History,L.N.M.U.Darbhanga, Bihar

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र 21वीं सदी के समकालीन भू–राजनीतिक और सामाजिक परिदृश्य में बार–बार उभरने वाले वैश्विक दंगों, नागरिक अशांति और जातीय संघर्षों के विनियामक समाधान के रूप में गांधीवादी दर्शन के दो कोर उपकरणों सत्याग्रह और 'अहिंसा' की व्यावहारिक और वैधानिक प्रासंगिकता का आलोचनात्मक विश्लेषण करता है। 21वीं सदी के संघर्ष अब केवल भौगोलिक सीमाओं या पारंपरिक हथियारों तक सीमित नहीं हैं; वे डिजिटल प्लेटफॉर्म्स, कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा संचालित एल्गोरिद्मिक नफरत (Algorithmic Hate), और पहचान की बहुसंख्यकवादी व अल्पसंख्यकवादी आक्रामक राजनीति से विरूपित हैं। इस पृष्ठभूमि में, यह अध्ययन पारंपरिक श्सैन्य–केंद्रित सुरक्षा प्रतिमान (State&Centric Security Paradigm) के विपरीत एक श्मानव–केंद्रितश और नैतिक–दार्शनिक विकल्प प्रस्तुत करता है। प्राथमिक स्रोतों (गांधीवादी वाङ्मय) और समकालीन वैश्विक संघर्षों (जैसेकृ यूरोप और अमेरिका में नस्लीय दंगे, पश्चिम एशिया और अफ्रीका के जातीय नरसंहार) के केस स्टडीज के माध्यम से यह शोध पत्र यह सिद्ध करता है कि सत्याग्रह केवल एक निष्क्रिय प्रतिरोध (Passive Resistance) नहीं है, बल्कि यह संरचनात्मक हिंसा (Structural Violence) को भीतर से विखंडित करने वाली एक सक्रिय, गतिशील और हाइब्रिड–लचीली (Hybrid&Resilient) कूटनीतिक वास्तुकला है।

मुख्य शब्द – सत्याग्रह, अहिंसा, जातीय संघर्ष, 21वीं सदी, डिजिटल सांप्रदायिकता, संरचनात्मक हिंसा, संघर्ष समाधान।

प्रस्तावना

इक्कीसवीं शताब्दी के प्रथम तीन दशकों का वैश्विक परिदृश्य यह प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त है कि तकनीकी और समष्टि आर्थिक संवृद्धि के अभूतपूर्व स्तर पर पहुँचने के बावजूद, मानव समाज आंतरिक रूप से अत्यधिक खंडित और हिंसक हुआ है। शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद यह माना गया था कि उदारवादी लोकतंत्र (Liberal Democracy) और वैश्विक एकीकरण संघर्षों को न्यूनतम कर देंगे परंतु इसके विपरीत, समकालीन समय रेखा में हम नस्लीय, धार्मिक, भाषाई और जातीय पहचानों के हिंसक उभार का एक नया विस्थापन देख रहे हैं।

वर्तमान समय में दंगों और जातीय संघर्षों का चरित्र असममित और हाइपर–कनेक्टेड (Hyper&connected) हो चुका है। अमेरिका में ब्लैक लाइव्स मैटर के दौरान भड़के नागरिक दंगे हों, फ्रांस और ब्रिटेन में प्रवासियों और मूल निवासियों के बीच होता वैचारिक व भौतिक घर्षण हो, या अफ्रीका और मध्य पूर्व में जारी खूनी जातीय नरसंहार ये सभी घटनाएं यह दर्शाती हैं कि राज्य की पारंपरिक दमनकारी शक्ति (पुलिस, सेना, और विधिक कड़ाई) इन संघर्षों को सतह पर दबाने में तो सक्षम है, लेकिन उनके अंतर्निहित मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारणों का समूल नाश करने में पूरी तरह पंगु सिद्ध हुई है।

इस जटिल और अशांत वैश्विक विन्यास में, महात्मा गांधी (1869–1948) द्वारा प्रतिपादित सत्याग्रह–सत्य का आग्रह और अहिंसा के सिद्धांत केवल इतिहास के पन्नों में दफन राजनीतिक

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

उपकरण प्रतीत नहीं होते, बल्कि वे संघर्ष समाधान के सबसे अत्याधुनिक, तार्किक और स्थायी विधिक विकल्प के रूप में उभरते हैं। गांधी जी ने इन सिद्धांतों का प्रयोग न केवल एक विदेशी हुकूमत के खिलाफ किया था, बल्कि उन्होंने दक्षिण अफ्रीका और भारत में नस्लीय व सांप्रदायिक दंगों को शांत करने के लिए अपनी जान जोखिम में डालकर इनके व्यावहारिक अनुप्रयोगों को संहिता किया था। प्रस्तुत शोध पत्र का मूल उद्देश्य 21वीं सदी की विशिष्ट विसंगतियों के आलोक में गांधीवादी संघर्ष–समाधान वास्तुकला की प्रासंगिकता और उसकी सीमाओं का एक सघन अकादमिक ऑडिट करना है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study)

1. 21वीं सदी के वैश्विक दंगों और जातीय संघर्षों की बदलती संरचनात्मक और तकनीकी प्रकृति का दार्शनिक विश्लेषण करना।
2. गांधीवादी सत्याग्रह और अहिंसा के मूल तत्वों की समकालीन संघर्ष–समाधान सिद्धांतों (Conflict Resolution Theories) के प्रकाश में पुनर्व्याख्या करना।
3. आधुनिक डिजिटल युग में सत्याग्रह के व्यावहारिक क्रियान्वयन की विनियामक संभावनाओं और उसके सामने मौजूद संरचनात्मक बाधाओं का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।

शोध पद्धति (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध पत्र मुख्य रूप से विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक और दार्शनिक शोध पद्धति (Analytical Comparative and Philosophical Methodology) पर आधारित है। अध्ययन की गुणात्मक शुचिता सुनिश्चित करने के लिए प्राथमिक स्रोतों के रूप में महात्मा गांधी के मूल ग्रंथों उनके द्वारा संपादित पत्रों तथा संयुक्त राष्ट्र के संघर्ष–निवारण चार्टर्स का विधिक विश्लेषण किया गया है। इसके समांतर, द्वितीयक स्रोतों के रूप में वैश्विक थिंक–टैंकों के डेटाबेस और आधुनिक दार्शनिकों के अहिंसक प्रतिरोध के सिद्धांतों का आलोचनात्मक उपयोग किया गया है।

21वीं सदी के संघर्षों की बदलती संरचनात्मक और तकनीकी प्रकृति

21वीं सदी में दंगों और जातीय संघर्षों का विन्यास 20वीं सदी के पारंपरिक युद्धों से सर्वथा भिन्न है। आज के संघर्षों को समझने के लिए हमें उनके तीन नए कोर घटकों को समझना होगा

21वीं सदी के संघर्षों का त्रि–आयामी विन्यास

⬇

➡ सोशल मीडिया, डीपफेक और एआई द्वारा नफरती विमर्श का त्वरित प्रसार।

⬇

पहचान का बहुसंख्यकवादी उभार, ➡ लोकलुभावन कूटनीति द्वारा बहुसंख्यकों में श्असुरक्षा का कृत्रिम डर पैदा करना।

⬇

राज्य की प्रकृति का सैन्यीकरण, ➡ सरकारों द्वारा नागरिक असहमति को दबाने के लिए कड़े विधिक सर्विलांस का उपयोग।

⬇

परिणाम समाज के भीतर एक अदृश्य, गहरा और स्थायी संरचनात्मक घर्षण,

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

डिजिटल और एल्गोरिद्मिक सांप्रदायिकता

21वीं सदी के दंगों की शुरुआत अब किसी भौतिक मैदान से नहीं, बल्कि डिजिटल स्पेस से होती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस दौर में , मॉर्फ्ड वीडियो और एआई–जनित फेक न्यूज के माध्यम से किसी भी जातीय या धार्मिक समूह के खिलाफ नफरत को कुछ ही सेकंडों में वैश्विक स्तर पर फैला दिया जाता है। सोशल मीडिया के इको चौंबर्स नागरिक की तार्किक चेतना को संकुचित कर उसे एक हिंसक भीड़ में तब्दील कर देते हैं।

जोहान गाल्टुंग के संरचनात्मक और सांस्कृतिक हिंसा का प्रतिमान

आधुनिक जातीय संघर्ष केवल दो समूहों के बीच की भौतिक लड़ाई नहीं हैं वे समाज के भीतर मौजूद संरचनात्मक हिंसा का परिणाम हैं। जब राज्य की नीतियां किसी विशिष्ट जातीय या भाषाई अल्पसंख्यक को व्यवस्था से बाहर (Marginalized) कर देती हैं, तो वह असंतोष किसी एक छोटे से बहाने से श्दंगोंश के रूप में फट पड़ता है। सांस्कृतिक हिंसा के तहत शिक्षा और विमर्शों का उपयोग कर विरोधी समूह को अमानवीय साबित किया जाता है, जिससे उनके खिलाफ हिंसा को विधिक और सामाजिक रूप से वैध माना जाने लगता है।

सत्याग्रह की दाशनिक वास्तुकला निष्क्रिय प्रतिरोध से तात्विक विच्छेद

अकादमिक और अंतरराष्ट्रीय संघर्ष–समाधान विमर्शों में कई बार गांधीवादी सत्याग्रह को पश्चिमी अवधारणा पैसिव रेजिस्टेंस (निष्क्रिय प्रतिरोध) का ही एक रूप मान लिया जाता है। परंतु, महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में अपने विधिक प्रयोगों के दौरान ही इन दोनों के बीच एक गहरी विभाजक रेखा खींच दी थी। 21वीं सदी के जटिल संघर्षों में इसके अनुप्रयोग को समझने के लिए इस तात्विक अंतर को संहिताबद्ध करना अनिवार्य है।

प्रतिरोध प्रणालियों का दार्शनिक विस्थापन,

निष्क्रिय प्रतिरोध ➡ कमजोरों का हथियार इसमें शत्रु के प्रति परोक्ष घृणा, अवसर मिलने पर हिंसा की गुंजाइश और केवल भौतिक लक्ष्यों की प्राप्ति निहित है।

↕ (तात्विक विच्छेद)

गांधीवादी सत्याग्रह ➡ बहादुरों का आत्मिक बल। इसमें शत्रु के प्रति पूर्ण सम्मान, किसी भी स्थिति में अहिंसा की विधिक कड़ाई और शत्रु का हृदय–परिवर्तन मुख्य ध्येय है।

⬇

21वीं सदी में निहिताथ केवल राजनीतिक समझौता नहीं, बल्कि सामाजिक विसंगति का स्थायी अंत, कमजोरों की विवशता बनाम आत्मिक दृढ़ता । निष्क्रिय प्रतिरोध की सीमा पश्चिमी दार्शनिकों के अनुसार, निष्क्रिय प्रतिरोध एक ऐसी रणनीति है जहाँ पीड़ित पक्ष के पास पर्याप्त शारीरिक या सैन्य बल नहीं होता, इसलिए वह विवश होकर अहिंसा का चोगा ओढ़ता है। इसमें विरोधी को असुविधा पहुँचाने और उसे पराजित करने की परोक्ष इच्छा छिपी होती है।

सत्याग्रह का विधिक बल गांधी जी का सत्याग्रह (सत्यआग्रह) किसी शारीरिक कमजोरी का परिणाम नहीं, बल्कि अत्यधिक आंतरिक और नैतिक शक्ति का परिचायक है। सत्याग्रही अपने विरोधी को शत्रु नहीं मानताय वह विरोधी के भीतर छिपे अन्याय के विचार से लड़ता है। इसका उद्देश्य शत्रु का दमन करना नहीं, बल्कि उसकी चेतना को जाग्रत कर उसका हृदय–परिवर्तन करना है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

21वीं सदी के असममित नागरिक संघर्षों में सत्याग्रह का नैतिक बल

जीन शार्प ने अपनी पुस्तक द पॉलिटिक्स ऑफ नॉनवाइओलेंट एक्शन में गांधीवादी उपकरणों को आधुनिक संघर्षों के लिए री–इंजीनियर किया है। 21वीं सदी के अधिकांश दंगे और जातीय संघर्ष असममित हैं अर्थात एक तरफ आधुनिक हथियारों, सर्विलांस ग्रिडों और सैन्य तंत्र से सुसज्जित राज्य है, तो दूसरी तरफ ऐतिहासिक व सामाजिक विसंगतियों से उपजा आक्रोशित जन–समुदाय ।

सैन्य दमन की नैतिक पराजय

जब राज्य किसी जातीय दंगे या नागरिक असंतोष को कुचलने के लिए अत्यधिक बल (जैसे आंसू गैस, इंटरनेट प्रतिबंध, या सैन्य बल) का प्रयोग करता है, तो वह संघर्ष को समाप्त नहीं करता, बल्कि उसे और अधिक हिंसक विन्यास में धकेल देता है।सत्याग्रह का जवाबी विवर्तन यदि पीड़ित समुदाय इस दमन के सामने पूर्णतः अहिंसक और नैतिक रूप से अडिग रहता है, तो राज्य की यह कठोर शक्ति अपनी नैतिक वैधता खो देती है। समकालीन समय में जब किसी अहिंसक प्रदर्शनकारी पर राज्य की क्रूरता का लाइव–वीडियो वैश्विक स्तर पर प्रसारित होता है, तो वह राज्य की विधिक संप्रभुता को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कटघरे में खड़ा कर देता है।

अहिंसा केवल कायरता का अभाव नहीं एक सक्रिय कूटनीतिक वास्तुकला

गांधीवादी अहिंसा कोई निष्क्रिय तत्व नहीं है यह संघर्ष समाधान की एक अत्यधिक गतिशील और आक्रामक कूटनीतिक वास्तुकला है। गांधी जी ने स्पष्ट किया था कि कायरता और अहिंसा एक साथ नहीं रह सकते। यदि कायरता और हिंसा में से किसी एक को चुनना हो, तो उन्होंने हिंसा को चुनने की विधिक अनुमति दी थी, क्योंकि कायरता आत्मा की मृत्यु है।

जोहान गाल्टुंग के सकारात्मक शांति का गांधीवादी अभिसरण

आधुनिक शांति अध्ययनों के जनक जोहान गाल्टुंग ने नकारात्मक शांति (केवल युद्ध या भौतिक हिंसा का न होना) और श्सकारात्मक शांति (समाज से संरचनात्मक शोषण, असमानता और घृणा का समूल नाश) के बीच अंतर किया है।गांधीवादी अहिंसा का दर्शन गांधी जी की अहिंसा वास्तव में श्सकारात्मक शांति की ही वैधानिक वास्तुकला है। वे केवल बंदूकों के शांत होने को अहिंसा नहीं मानते थे। जब तक समाज में एक जाति दूसरी जाति से घृणा कर रही है, या एक आर्थिक वर्ग दूसरे वर्ग का विधिक शोषण कर रहा है, तब तक गांधीवादी दर्शन के अनुसार वह समाज अप्रत्यक्ष हिंसा की स्थिति में ही है।

समकालीन नस्लीय और जातीयता के खिलाफ नैतिक ढाल

21वीं सदी के उत्तर–सत्य युग में, जहाँ पहचान की राजनीति चरम पर है, सत्याग्रह निम्नलिखित तीन विन्यासों के माध्यम से संघर्षों के शमन का मार्ग प्रशस्त करता है।

- **विरोधी के अमानवीकरण** की प्रक्रिया पर रोकरू दंगों के दौरान एआई–एल्गोरिदम और फेक न्यूज विरोधी समूह को एक दानव या कीड़ा साबित करने का प्रयास करते हैं ताकि उनके खिलाफ हिंसा को जायज ठहराया जा सके। सत्याग्रह इस नैरेटिव को तोड़ता है। जब एक सत्याग्रही खुद कष्ट सहकर विरोधी के सामने खड़ा होता है, तो वह विरोधी के भीतर छिपी मानवीय करुणा को जाग्रत कर देता है।
- सामूहिक अपराधबोध का उदय जब हिंसक भीड़ किसी निहत्थे और शांत सत्याग्रही पर प्रहार करती है, तो उस भीड़ के भीतर एक मनोवैज्ञानिक आत्म–ग्लानि और सामूहिक अपराधबोध का जन्म होता है। यह अपराधबोध दंगों की गति को स्वतः ही विखंडित कर देता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

- संवाद की विधिक पुनर्स्थापना सैन्य बल दो समुदायों के बीच केवल एक भौतिक दूरी बना सकता है, लेकिन उनके दिलों के बीच की खाई को नहीं भर सकता। सत्याग्रह संघर्षरत पक्षों के बीच टूटे हुए राजनयिक और सामाजिक संवाद के विधिक सेतु को पुनः सक्रिय करता है।

21वीं सदी की विसंगति एल्गोरिद्मिक नफरत और आभासी दंगे

21वीं सदी में जातीय संघर्षों और दंगों का भूगोल पूरी तरह बदल चुका है। अब भौगोलिक सीमाओं से अधिक महत्वपूर्ण डिजिटल स्पेस हो चुका है, जहाँ हिंसा की योजनाएं और घृणा का प्रसार भौतिक रूप से दंगा होने से बहुत पहले ही संहिताबद्ध हो जाता है।

डिजिटल स्पेस में नफरत का विनियामक चक्र,

⬇

एल्गोरिद्मिक संकुचन, ➡ सोशल मीडिया के इको चौंबर्स द्वारा नागरिक को केवल एकतरफा, भड़काऊ और पक्षपातपूर्ण विमर्श दिखाना।

⬇

डीप फेक व कृत्रिम विरूपण, ➡ एआई–जनित फेक न्यूज और मॉर्फ्ड वीडियो द्वारा विरोधी समूह के प्रति कृत्रिम असुरक्षा का नैरेटिव गढ़ना।

⬇

भौतिक प्रस्फोट, ➡ आभासी दुनिया की नफरत का वास्तविक सड़कों पर जातीय दंगों के रूप में रूपांतरण।

⬇

गांधीवादी जवाबी विवर्तन ➡ पारंपरिक अनशन के स्थान पर डिजिटल सत्याग्रह की अपरिहार्यता,

आधुनिक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के एल्गोरिदम इस प्रकार डिजाइन किए गए हैं कि वे उपयोगकर्ता को वही सामग्री अधिक दिखाते हैं जो उसके पूर्वग्रहों को पुष्ट करती है। यह विन्यास समाज को वैचारिक रूप से खंडित कर देता है। विरोधी समूह के प्रति करुणा और संवाद की गुंजाइश पूरी तरह समाप्त हो जाती है, जो गांधीवादी दर्शन के श्सत्य की बहुलता के सिद्धांत के सर्वथा विपरीत है।

डिजिटल सत्याग्रह उत्तर–सत्य युग में गांधीवादी प्रतिमान

जब दंगे और संघर्ष डिजिटल हो चुके हैं, तो उनके समाधान के उपकरण भी केवल भौतिक नहीं रह सकते। 21वीं सदी का समाजशास्त्र डिजिटल सत्याग्रह के एक नए वैधानिक प्रतिमान की मांग करता है। यह तकनीक का निषेध नहीं है, बल्कि तकनीक का नैतिक और मानवीय दोहन है।

सूचनात्मक शुचिता के लिए आग्रह

सत्य का अन्वेषण गांधी जी का सत्याग्रह सत्य पर टिका है। डिजिटल सत्याग्रह का पहला स्तंभ उत्तर–सत्य के दौर में तथ्यों की विधिक और वैधानिक शुचिता को बनाए रखना है। व्यावहारिक अनुप्रयोगरू जब कोई भड़काऊ या फेक वीडियो सोशल मीडिया पर प्रसारित किया जाए, तो डिजिटल सत्याग्रही का कर्तव्य केवल मूकदर्शक बने रहना या हिंसक प्रतिक्रिया देना नहीं है। उसे एआई–टूल्स और तार्किक विमर्शों के माध्यम से उस झूठ का विखंडन कर शांति और सौहार्द के नैरेटिव को उसी गति से वायरल करना होगा। यह अहिंसक सूचना कूटनीति का आधुनिक रूप है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 04, (Oct-Dec 2025)

डिजिटल उपवास और एकांतवास

गांधी जी समाज में आत्म–शुद्धि के लिए उपवास और मौन व्रत का सहारा लेते थे। समकालीन समय में जब सोशल मीडिया पर नफरत का सैलाब उमड़ा हो, तब डिजिटल डिटॉक्सया डिजिटल उपवास एक बड़ा हथियार बन सकता है। भड़काऊ सामग्री को शेयर न करना, नफरती विमर्शों पर कमेंट कर उन्हें एल्गोरिद्मिक रीच न देना, और कुछ समय के लिए आभासी दुनिया से कटकर वास्तविक समाज में जाकर संवाद करना यह आधुनिक सत्याग्रह के व्यावहारिक रूप हैं।

निष्कर्ष

21वीं सदी के उत्तर–सत्य, तकनीकी रूप से सघन और भू–राजनीतिक रूप से अशांत वातावरण में दंगों और जातीय संघर्षों का यह अकादमिक विश्लेषण यह अकाट्य निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि महात्मा गांधी के सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धांत अतीत के अवशेष नहीं, बल्कि भविष्य की अनिवार्य विधिक आवश्यकताएं हैं। आज जब नफरत डिजिटल हो चुकी है, एल्गोरिदम नागरिकों को हिंसक भीड़ों में बदल रहे हैं, और राज्य अपनी ही जनता के खिलाफ अति–सर्विलांस और सैन्य दमन का सहारा ले रहे हैं तब पारंपरिक सैन्य–केंद्रित सुरक्षा मॉडल पूरी तरह अप्रासंगिक प्रतीत होता है।डिजिटल सत्याग्रह के माध्यम से सूचनात्मक शुचिता की रक्षा करना, सकारात्मक शांति के तहत समाज की आंतरिक विसंगतियों (जाति, वर्ग, नस्ल) का समूल नाश करना, और विरोधी के अमानवीकरण की प्रक्रिया को रोकनाकृये वे समकालीन उपकरण हैं जो आज के संघर्षों का स्थायी और मनोवैज्ञानिक समाधान दे सकते हैं। यद्यपि आधुनिक राज्य की क्रूरता और उग्रवादी संगठनों की नैतिक शून्यता के कारण सत्याग्रह के सामने गंभीर संरचनात्मक सीमाएं मौजूद हैं, परंतु मानव सभ्यता के अस्तित्व को परमाणु और सामाजिक आत्म–विनाश से बचाने का एकमात्र मार्ग यही है। वैश्विक समाज को यदि 21वीं सदी के इन अंतहीन हिंसक चक्रों से मुक्त होना है, तो उसे शक्ति की संप्रभुता को त्यागकर नैतिकता की संप्रभुता के गांधीवादी प्रतिमान को स्वीकार करना ही होगा।

संदर्भ सूची

1. गांधी, मोहनदास करमचंद (1909½- Hind Swaraj or Indian Home Rule नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद (मूल संदर्भ)।
2. गांधी, मोहनदास करमचंद (1927). An Autobiography: The Story of My Experiments with Truth, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद।
3. गाल्टुंग, जोहान (1969). Violence Peace and Peace Research जर्नल ऑफ पीस रिसर्च, वॉल्यूम 6, नंबर 3, पृष्ठ 167–191।
4. शार्प, जीन (1973). The Politics of Nonviolent Action (3 Vols-), पोर्टर सार्जेंट पब्लिशर्स, बोस्टन।
5. स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट (SIPRI) (2025). Yearbook 2025: Armaments Disarmament and International Security, ऑक्सफर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
6. पारेख, भीखू (1989). Gandhi's Political Philosophy: A Critical Examination मैकमिलन, लंदन।
7. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) (2024)- Human Security in the Anthropocene: New Threats and Solutions, संयुक्त राष्ट्र सचिवालय, न्यूयॉर्क।